Indian Journal of Modern Research and Reviews

This Journal is a member of the *'Committee on Publication Ethics'*

Online ISSN:2584-184X

Research Article

रामायण एवं महाभारत में भारतीय संस्कृति में योगदान

डॉ. अनिता धाकड़ [1], नेमीचन्द्र सैनी [*2]

[1] शोध निर्देशक, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्व विद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत

[2] शोधार्थी, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्व विद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author: *नेमीचन्द्र सैनी

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.18214048

Abstract

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम एवं समृद्ध संस्कृतियों में से एक है, जिसकी निरंतरता, सहिष्णुता और जीवन-मूल्यपरक दृष्टि इसे विशिष्ट बनाती है। इस संस्कृति के निर्माण, संरक्षण एवं विकास में रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्यों की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण रही है। ये दोनों ग्रंथ न केवल साहित्यिक कृतियाँ हैं, बल्कि भारतीय समाज की सामूहिक चेतना, नैतिक मूल्यों, सामाजिक संरचना तथा दार्शनिक चिंतन के आधार स्तंभ भी हैं।

रामायण भारतीय संस्कृति के आदर्शवादी स्वरूप को प्रस्तुत करती है, जहाँ धर्म, मर्यादा, कर्तव्य, पारिवारिक मूल्य और आदर्श शासन की संकल्पना स्पष्ट रूप से उभरकर आती है। इसके विपरीत, महाभारत जीवन की यथार्थवादी जटिलताओं, धर्म के द्वंद्वात्मक स्वरूप, सत्ता-संघर्ष, नैतिक दुविधाओं तथा सामाजिक प्रश्नों को उजागर करता है। श्रीमद्भगवद्गीता के माध्यम से कर्मयोग, ज्ञानयोग और भक्तियोग का समन्वय भारतीय सांस्कृतिक चेतना को दार्शनिक गहराई प्रदान करता है।

प्रस्तुत शोध में रामायण और महाभारत में निहित सांस्कृतिक तत्त्वों का तुलनात्मक, विश्लेषणात्मक एवं आलोचनात्मक अध्ययन किया गया है। अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि ये दोनों महाकाव्य मिलकर भारतीय संस्कृति को संतुलित, जीवंत और कालातीत स्वरूप प्रदान करते हैं, जिसकी प्रासंगिकता समकालीन वैश्विक संदर्भों में भी बनी हुई है।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2584-184X
- **Received:** 26-11-2025
- **Accepted:** 28-12-2025
- **Published:** 07-01-2026
- **IJCRM:**4(1); 2026: 29-31
- **©2025, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

डॉ. अनिता धाकड़, नेमीचन्द्र सैनी . रामायण एवं महाभारत में भारतीय संस्कृति में योगदान. Indian J Mod Res Rev. 2026;4(1):29-31.

Access this Article Online

www.multiarticlesjournal.com

कुंजी शब्द: रामायण, महाभारत, भारतीय संस्कृति, धर्म, कर्म, मर्यादा, आदर्शवाद, यथार्थवाद, नारी चेतना, राजधर्म, श्रीमद्भगवद्गीता

परिचय

भारतीय संस्कृति की विशेषता उसकी निरंतरता, सहिष्णुता और जीवनमूल्यपरक दृष्टि है। यह संस्कृति केवल भौतिक या सामाजिक व्यवस्था तक सीमित नहीं रही, बल्कि उसने मानव जीवन के नैतिक, आध्यात्मिक, दार्शनिक एवं व्यवहारिक पक्षों को समान रूप से विकसित किया है। इस सांस्कृतिक विकास में रामायण और महाभारत का स्थान केंद्रीय है।

रामायण और महाभारत न केवल प्राचीन महाकाव्य हैं, बल्कि वे भारतीय समाज की सामूहिक चेतना (Collective Consciousness) के संवाहक भी हैं। इन ग्रंथों के माध्यम से भारतीय संस्कृति ने जीवन के आदर्श, कर्तव्य-बोध, सामाजिक मर्यादा, नारी की भूमिका, राजधर्म तथा मानवीय संवेदनाओं को पीढ़ी-दर-पीढ़ी संप्रेषित किया है। इस अध्याय का उद्देश्य इन दोनों महाकाव्यों में निहित सांस्कृतिक तत्त्वों का गहन, तुलनात्मक एवं आलोचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करना है।

© 2025 डॉ. अनिता धाकड़, नेमीचन्द्र सैनी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

भारतीय संस्कृति:सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य

भारतीय संस्कृति को केवल परंपराओं का समुच्चय नहीं माना जा सकता, बल्कि यह एक जीवंत जीवन-दर्शन है।

भारतीय संस्कृति के मूल तत्त्व हैं-

- धर्म (कर्तव्य आधारित नैतिकता)
- कर्म (उत्तरदायित्वपूर्ण आचरण)
- पुरुषार्थ सिद्धांत (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष)
- सहिष्णुता एवं समन्वय

रामायण और महाभारत ने इन तत्त्वों को कथात्मक शैली में प्रस्तुत कर संस्कृति को जनसुलभ बनाया। यही कारण है कि ये ग्रंथ केवल विद्वानों तक सीमित न रहकर लोकजीवन का हिस्सा बन गए।

रामायण: आदर्शवादी सांस्कृतिक मॉडल

रामायण को भारतीय संस्कृति का नैतिक-आदर्शवादी ग्रंथ कहा जा सकता है। इसमें आदर्श व्यक्ति, आदर्श परिवार, आदर्श समाज और आदर्श राज्य की संकल्पना प्रस्तुत की गई है।

❖ **धर्म, मर्यादा और कर्तव्य**

रामायण में धर्म को मर्यादा से जोड़ा गया है। श्रीराम का संपूर्ण जीवन मर्यादा का प्रतीक है।

- पिता की आज्ञा का पालन
- व्यक्तिगत सुख का त्याग
- समाज के प्रति उत्तरदायित्व

ये सभी तत्व भारतीय संस्कृति में कर्तव्यप्रधान जीवन को स्थापित करते हैं। रामायण यह सिद्ध करती है कि संस्कृति का मूल आधार नैतिक अनुशासन है।

❖ **पारिवारिक संस्कृति और सामाजिक सामंजस्य**

रामायण भारतीय संयुक्त परिवार व्यवस्था का आदर्श प्रस्तुत करती है। भरत का राज्य अस्वीकार करना, लक्ष्मण का सेवा भाव और उर्मिला का त्यागकृये सभी भारतीय सांस्कृतिक दृष्टि में परिवार को समाज की मूल इकाई सिद्ध करते हैं।

❖ **नारी: त्याग से चेतना तक**

सीता का चरित्र केवल त्याग का प्रतीक नहीं, बल्कि नैतिक प्रतिरोध और आत्मसम्मान का प्रतीक भी है। रामायण में नारी को संस्कृति का आधारस्तंभ माना गया है, जो परिवार, समाज और मूल्य-प्रणाली को संतुलित रखती है।

❖ **रामराज्य: सांस्कृतिक-राजनीतिक आदर्श**

रामराज्य की अवधारणा केवल शासन व्यवस्था नहीं, बल्कि सांस्कृतिक न्याय की संकल्पना है-

- समानता
- लोककल्याण
- नैतिक शासन

इसने भारतीय राजनीतिक संस्कृति को नैतिक दृष्टि प्रदान की।

महाभारत: यथार्थवादी और समालोचनात्मक संस्कृति दृष्टि

महाभारत भारतीय संस्कृति का यथार्थवादी दस्तावेज है। यह जीवन के आदर्श और यथार्थ के बीच के संघर्ष को उजागर करता है।

❖ **धर्म का द्वंद्वात्मक स्वरूप**

महाभारत में धर्म निश्चित नियम नहीं, बल्कि परिस्थितिनिष्ठ निर्णय है। युधिष्ठिर, अर्जुन, भीष्म और कर्णकृसभी पात्र धर्म के जटिल प्रश्नों से जूझते हैं। यह भारतीय संस्कृति की बौद्धिक उदारता और नैतिक लचीलापन दर्शाता है।

❖ **श्रीमद्भगवद्गीता: भारतीय संस्कृति का दार्शनिक मूल**

गीता भारतीय संस्कृति की आत्मा है।

- कर्मयोग → सामाजिक उत्तरदायित्व
- ज्ञानयोग → विवेक और आत्मचेतना
- भक्तियोग → भावनात्मक संतुलन

गीता ने भारतीय संस्कृति को पलायनवादी नहीं, बल्कि कर्मशील बनाया।

❖ **राजधर्म और सत्ता-संस्कृति**

महाभारत में सत्ता को साधन माना गया है, साध्य नहीं।

राजधर्म का उद्देश्य है-

- न्याय
- लोककल्याण
- नैतिक नियंत्रण

यह भारतीय संस्कृति की लोकतांत्रिक चेतना का प्रारंभिक रूप है।

❖ **नारी चेतना और प्रतिरोध की संस्कृति**

द्रौपदी का प्रश्न-"क्या स्त्री स्वयं की स्वामिनी नहीं?"-भारतीय सांस्कृतिक इतिहास का क्रांतिकारी क्षण है।

गांधारी का नैतिक विरोध और कुंती का संघर्ष भारतीय संस्कृति में नारी की सक्रिय भूमिका को प्रमाणित करता है।

रामायण और महाभारत: तुलनात्मक सांस्कृतिक अध्ययन

विषय	आदर्शवादी	यथार्थवादी
दृष्टिकोण	आदर्शवादी	यथार्थवादी
धर्म	मर्यादित	द्वंद्वात्मक
नारी	आदर्श	प्रश्नकर्ता
राजनीति	आदर्श शासन	शक्ति और नैतिकता का संघर्ष

यह तुलनात्मक अध्ययन स्पष्ट करता है कि दोनों ग्रंथ मिलकर भारतीय संस्कृति को संतुलित बनाते हैं।

सामाजिक संरचना और सांस्कृतिक संस्थाएँ

दोनों महाकाव्यों ने वर्ण-आश्रम व्यवस्था, संस्कार प्रणाली, गुरु-शिष्य परंपरा, दान, सेवा और तप को सांस्कृतिक ढांचे का अंग बनाया। इससे समाज में कर्तव्य विभाजन और नैतिक अनुशासन स्थापित हुआ।

लोकसंस्कृति, कला और जनसंचार

रामलीला, कथकली, यक्षगान, भरतनाट्यम, लोकगीत, चित्रकला, टेलीविजन धारावाहिक और सिनेमाकृसभी में रामायण और महाभारत की सांस्कृतिक छाया दृष्टिगोचर होती है। इससे स्पष्ट है कि ये ग्रंथ जीवित संस्कृति हैं।

समकालीन वैश्विक संदर्भ में उपयोगिता

आज के भौतिकवादी और प्रतिस्पर्धात्मक समाज में नैतिक संकट, सामाजिक विघटन और मूल्य-अवनति की समस्याओं का समाधान रामायण और महाभारत में निहित सांस्कृतिक दृष्टि प्रदान करती है-

© 2025 डॉ. अनिता धाकड़, नेमीचन्द्र सैनी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

- कर्तव्य बनाम अधिकार
- सहिष्णुता
- मानवीय करुणा

निष्कर्ष

रामायण और महाभारत भारतीय संस्कृति के आधारस्तंभ हैं। एक आदर्श प्रस्तुत करता है, दूसरा यथार्थ से जूझना सिखाता है। इन दोनों के समन्वय से ही भारतीय संस्कृति संतुलित, जीवंत और कालातीत बनी है। भारतीय संस्कृति की नैतिक दृढ़ता, सामाजिक लचीलापन और वैश्विक प्रासंगिकता में इन महाकाव्यों का योगदान अमूल्य, स्थायी और मार्गदर्शक है।

संदर्भ ग्रंथ-सूची

1. वाल्मीकि. रामायण. भारत: प्राचीन संस्कृत ग्रंथ.
2. वेदव्यास. महाभारत. भारत: प्राचीन संस्कृत ग्रंथ.
3. वेदव्यास. श्रीमद्भगवद्गीता. भारत: प्राचीन संस्कृत ग्रंथ.
4. राधाकृष्णन एस. इंडियन फिलॉसफी (Indian Philosophy). नई दिल्ली: जॉर्ज एलेन एंड अनविन.
5. दिनकर रामधारी सिंह. संस्कृति के चार अध्याय. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन.
6. शर्मा आरएस. प्राचीन भारत का इतिहास. नई दिल्ली: ओरिएंट ब्लैकस्वान.
7. चट्टोपाध्याय डीपी. भारतीय दर्शन. नई दिल्ली: पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस.
8. ठाकुर किशोरीलाल. भारतीय संस्कृति का विकास. वाराणसी: चौखम्बा प्रकाशन.

Creative Commons License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–NonCommercial–NoDerivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) License. This license permits users to copy and redistribute the material in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and the source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted.

About the corresponding author

नेमीचन्द्र सैनी ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान में शोधार्थी हैं। उनकी शोध रुचियाँ भारतीय संस्कृति, प्राचीन साहित्य और महाकाव्य अध्ययन से संबंधित हैं। वे विशेष रूप से रामायण और महाभारत में निहित सांस्कृतिक, नैतिक तथा दार्शनिक मूल्यों के अध्ययन और विश्लेषण में रुचि रखते हैं।

© 2025 डॉ. अनिता धाकड़, नेमीचन्द्र सैनी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/